पाश की कविता

हमारे समयों में

यह सबकुछ हमारे ही समयों में होना था
कि समय ने रुक जाना था थके हुए युद्ध की तरह
और कच्ची दीवारों पर लटकते कैलेंडरों ने
प्रधानमंत्री की फ़ोटो बनकर रह जाना था

धूप से तिड़की हुई दीवारों के परखचों
और धुएं को तरसते चूल्हों ने
हमारे ही समयों का गीत बनना था

गरीब की बेटी की तरह बढ़ रहा
इस देश के सम्मान का पौधा
हमारे रोज़ घटते कद के कंधों पर ही उगना था
शानदार एटमी तजर्बे की मिट्टी
हमारी आत्मा में फ़ैले हुए रेगिस्तान से उड़नी थी
मेरे–आपके दिलों की
सड़क के मस्तक पर जमना था
रोटी मांगने आए अध्यापकों के मस्तक की नसों
का लहू दशहरे के मैदान में
गुम हुई सीता नहीं, बस तेल का टिन मांगते हुए
रावण हमारे ही बूढों को बनना था
अपमान वक्त का हमारे ही समयों में होना था
हिटलर की बेटी ने जिंदगी के खेतों की मां बनकर
खुद हिटलर का 'डरौना'
हमारे ही मस्तकों में गडाना था

यह शर्मनाक हादसा हमारे ही साथ होना था
कि दुनिया के सबसे पवित्र शब्दों ने
बन जाना था सिंहासन की खड़ाऊं–
मार्क्स का सिंह–जैसा सिर
दिल्ली की भूल–भूलैयों में मिमियाता फिरता
हमें ही देखना था
मेरे यारो, यह कुफ्र हमारे ही समयों में होना था
बहुत दफ़ा, पक्के पुलों पर लड़ाइयां हुईं
लेकिन जुल्म की शमशीर के
घूंघट न मुड़ सके
मेरे यारो, अपने अकेले जीने की खाहिश कोई
पीतल का छल्ला है हर पल जो घिस रहा
न इसने यार की निशानी बनना है
न मुश्किल वक्त में रकम बनना है
मेरे यारो, हमारे वक्त का एहसास
बस इतना ही न रह जाए
कि हम धीमे–धीमे मरने को ही जीना समझ बैठे थे
कि समय हमारी घड़ियों से नहीं
हड्डियों के खुरने से मापे गए

यह गौरव हमारे ही समयों को मिलेगा
कि उन्होंने नफ़रत निथार ली
गुजरते गंदलाएं समुद्रों से
कि उनहोंने बींध पिलपिली मुहब्बत का तेंदुआ
और वह तैर कर जब पहुंचे
हुस्न की दहलीज़ों पर

यह गौरव हमारे ही समयों का होगा
यह गौरव हमारे ही समयों का होना है।

हत्या के समय हत्यारा बीके अस्पताल में 'दाखिल'

फ़रीदाबाद (म.मो.) फ़िल्मी कहानी की तर्ज पर झांसी के करीब 65 वर्षीय निजामुद्दीन ने 13 अप्रैल 2015 को झांसी में एक व्यक्ति की हत्या करने के बाद यहां के बादशाहखान अस्पताल में अपना दाखिला दिखा कर हत्यारोप से बचने का प्रयास किया है। कानून की आंखों में द्यघूल झोंकने का यह नाटक चल नहीं पाया।

भरोसे मंद सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार निजामुद्दीन ने बीके अस्पताल में एक ठेके के कर्मचारी महिपाल की मार्फ़त अस्पताल में नवनियुक्त एक प्रोबेशनर लेडी डॉक्टर बिशनवती से सांठ-गांठ करके स्वयं को 12 अप्रैल को दाखिल व 14 अप्रैल को डिसचार्ज दिखा दिया। उसने अपना फ़र्जी पता संजय कॉलोनी का दिखाया। संदेहात्मक बात यह है कि इस फ़र्जी मरीज की न तो ओपीडी में कहीं इन्ट्री है और न ही कजुअल्टी में, और तो और इसकी कोई फ़ाइल भी नहीं है जो कि हर दाखिल होने वाले मरीज़ की अनिवार्य रूप से बनती है। इसी फ़ाइल में रोगी का पूरा विवरण दर्ज होता है-यानी कि किस-किस डॉक्टर ने उसे देखा और क्या-क्या इलाज अथवा दवा लिखी। खानापूर्ति के लिये निजामुद्दीन का नाम दाखिला रजिस्टर में चढाने के लिये जब डॉ. बिशनवती को कोई खाली जगह 12 अप्रैल के पन्ने पर नहीं मिली तो उसने एक मरीज़ अनिता निवासी 1एच 88 का नाम काट कर निजामुउद्दीन का नाम लिख दिया। जिस मरीज़ का नाम काटा गया, वह बिना डॉक्टर की मर्ज़ी के बेड छोड़ कर चली गयी थी।

मात्र 8 माह की नौकरी वाली डॉ. बिशनवती के इस आपराधिक घोटाले की पोल तब खुली जब थाना कोतवाली झांसी पुलिस द्वारा हत्यारोपी निजामुद्दीन को गिरफ़्तार किये जाने पर उसने हत्या के समय अपने आपको बीके अस्पताल में भर्ती होने का दावा किया व इलाज के उपरान्त डिस्चार्ज स्लिप भी दिखाई। पुलिस तसदीक करने बीके अस्पताल आ पहुंची। जांच करने पर पुलिस को सारा फ़र्जीवाड़ा समझ में आ गया। पुलिस ने पाया कि हत्यारोपी को उल्टी व दस्त की बीमारी में भर्ती दिखाया गया था, जिसे डॉक्टर बिशनमती के अलावा 3 दिन तक किसी भी विशेषज्ञ डॉक्टर ने नहीं देखा। अस्पताल में कितने और कैसे मरीज़ भर्ती हैं, कजुअल्टी में कौन आ रहा है और कौन जा रहा है, इसे देखने के लिये आरएमओ (रेजिडेंट मेडिकल अफ़सर) डॉक्टर सभ्रांत की ड्यूटी है। क्या उन्होंने इस घोटाले को नहीं देखा या जानबूझ कर अनदेखा कर दिया? यह भी एक अस्पताल व्यवस्था का गंभीर प्रश्न है।

झांसी के सूत्रों की माने तो पुलिस पूछताछ में निजामुद्दीन ने सबकुछ उगलते हुए बता दिया कि महिपाल नामक एक व्यक्ति की मार्फ़त उसने यह सारा सौदा 5 लाख में पटाया था। यह रकम आगे किस-किस में कितनी-कितनी बंटी, जांच का विषय है। यद्यपि बीके अस्पताल प्रशासन जांच पर अभी कुंडली मारे बैठा है, परन्तु थाना कोतवाली झांसी पुलिस उन सभी लोगों को लपेटने की तैयारी कर रही है जिन्होंने एक हत्यारोपी को बचाने के लिये यह खेल रचा था।

हे शिव ! ये तुम्हारे कांवड़ धारी भक्त !

इन भटके हुए लोगों को कब सही मार्ग समझाओगे जो आपकी भांति समाधि तो लगाते नहीं वरन् आपकी भक्ति के नाम पर आपकी तरह तरह की प्रतिमाएँ उठाकर ; कांवड़ , अपने को भी और दूसरों को भी कष्ट दे रहे हैं.....

हे नीलकंठ !

आपकी तरह ये विषपान तो करते नहीं भांग धतूरा खा खाकर संस्कृति की धज्जियां उड़ा रहे हैं.....

हे गंगाधर !

जिस गंगा को आपने अपने शीश पर धारण किया है उसकी दशा देखकर रूह कांपती है जो आपकी उपासना के नाम पर विकृत हो रही है।कौन सा प्रदूषण शेष बचा है जो इन दिनों तथाकथित शिवभक्तों द्वारा सृष्टि को उपहार में नहीं दिया जा रहा.....

।।वायु प्रदूषण।।

धूंआधार उड़ान भरता बीड़ी सिग्रेट का धूंआ और दनदनादन सड़कों पर दौड़ लगाते ऐसे वाहनों का अतिक्रमण जिनका सदियों से प्रदूषण कार्ड ही नहीं बना होगाय मानवीयता की विनाश की गाथा गा रहा है....

।।जल प्रदूषण ।।

जल जो जीवन है और बाकी की तो छोड़ ही दें यदि केवल गंगा के जल की ही चर्चा करें तो उसकी पावनता को हमारी खोखली मान्यताओं का ग्रहण लग गया है.....उसकी शुचिता व अस्मिता को लूटने का ठेका आपके तथाकथित ठेकेदारों ने दिलोजान से उठा लिया है।आस्था के नाम पर पवित्र जल द्वारा मानव जीवन की होती हुई हानि पुकार रही है परंतु हमारे कान बहरे हो गये हैं.....

।।ध्वनि प्रदूषण ।।

भक्तिगीत के नाम पर ये आखिर कर्णभेदी हृदय आघाती शोर इस ब्रह्मांड की शान्ति को भंग करने के लिए मानो कृत संकल्प है।लाउडस्पीकर की वो ध्वनि जो मानव ही नहीं पशु पक्षियों के लिए भी अत्यंत घातक है कैसी बेरहमी से दहाड़ रही है मानो किसी के जीवन को भी न बख्शने की कसम उठा ली है.....

।।विचार प्रदूषण ।।

मनुष्य की सबसे महत्वपूर्ण खुराक है जीवन रक्षक विचार.....

वाणी की पवित्रता य सत्यता और शुध्द विचारों की धज्जियां उड़ाती ये खतरनाक टोलियां जिनका न वाणी पर संयम है न क्रियाओं पर.....नशे में धुत कुछ भी बोल देने को उतारू और कुछ भी कर देने के लिए तत्पर.....

कहाँ हैं हमारे मंडलेश्वर, महामंडलेश्वर, हमारे शंकराचार्यजी जिन्होंने धर्म के स्वरूप को बनाए रखने की जिम्मेदारी ली है।सोने चाँदी के सिंहासन पर विराजमान हो सोने चाँदी के पात्रों में 36 प्रकार के भोजन का स्वाद लेकर धर्म के स्वरूप को बरकरार कैसे रखा जा सकता है, उसे तो खुली आंखों से देखा जा सकता है। मजहबी झगड़ों को तूल देने पर जो बुद्धि खर्च होती है वो इन विषयों पर खर्च हो जाए तो.....

मेरा ही नहीं हर बुद्धिजीवी का सवाल है ये परंतु उत्तर किसी के पास नहीं.....

इसीलिए हे भोलेनाथ! आपसे ही गुजारिश करनी पड़ रही है।

हे नाथ ! कब बचाओगे इस विभीषिका से..... जिनको बुरी लगे मेरी बात वो मुझसे व्यक्तिगत रूप से वार्ता करने का समय रख सकते हैं यदि उन्होंने इसके लाभ सिद्ध कर दिये तो मैं सबसे आगे कांवड़ उठाऊंगी।

हरीराम

मज़दूर मोर्चा पहल
आओ पत्रकार बनें

तीन दशक पूरे करने को अग्रसर 'मज़दूर मोर्चा' को पत्रकारिता की दुनिया में एक निर्भीक, सजग व जनपरक अखबार के रूप में माना जाता है। एक ऐसा अखबार जिसकी आवाज को न खरीदा जा सकता है और ना डराया-दबाया जा सकता है। अपने पाठकों की आवाज बन चुके 'मज़दूर मोर्चा' के अनुभवी संपादकों/टिप्पणीकारों/संवाददाताओं द्वारा 'आओ पत्रकार बनें ' की पहल जल्द साकार होने जा रही है। इसके अन्तर्गत लोकतांत्रिक पत्रकारिता की दुनिया में उतरने के इच्छुक युवा, पत्रकारिता पाठ्यक्रमों के विद्यार्थी और यहां तक कि पत्रकार के रूप में काम कर रहे नव-पेशेवर भी लाभ उठा सकते हैं। चार हफ़्ते तक उन्हें पत्रकारिता से जुड़े विभिन्न पहलुओं की जानकारी देने के साथ-साथ ज़मीनी कवायदों से भी दो-चार कराया जायेगा।

पंजीकरण हेतु 'मज़दूर मोर्चा' कार्यालय से फ़ोन अथवा व्यक्तिगत रूप से 31 अगस्त तक सम्पर्क करें।

1डी/2 बी पी निकट हार्डवेयर चौक
एनआईटी फ़रीदाबाद
फ़ोन नम्बर-9999595632

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. हेम बुक डिपो, नियर सैन्ट्रल लाईब्रेरी, न्यू कैम्पस,जे.एन.यू।
10. स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब